धर्म की अवधारणा

धर्म का अर्थ और परिभाषा :-

स्टीफन के अनुसार, "रीलिजन (धर्म) शब्द रेलिगेट (Relegate) से बना है, जिसका अर्थ है 'बांधना' अर्थात मनुष्य को ईश्वर से संबंधित करना है।" धर्म शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के धृ शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है धारण करना अर्थात सभी जीवों के प्रति मन में दया धारण करने को ही धर्म कहा गया है।

सर जेम्स फ्रेजर कहते हैं, "धर्म से... मैं मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि या अराधना समझता हूँ, जिनके संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि वे प्रकृति और मानव जीवन को मार्ग दिखाती और नियंत्रित करती हैं।

हिन्दू धर्म की विशेषताएँ :- हिन्दू धर्म की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

1. **अलौकिक शक्तियों पर विश्वास :-** धर्म की एक मुख्य विशेषता अलौकिक शक्ति में विश्वास की है।
2. **पराशक्तियों से भय :-** हिन्दू धर्म में यह भय, डर अथवा कायरता का प्रतीक नहीं है, बल्कि ये अलौकिक शक्तियों से अपनी रक्षा का प्रतीक होता है।
3. **शक्तियों की कल्पना या अराधना :-** हिन्दू धर्म में अनेक प्रकार की प्राकृतिक एवं अलौकिक शक्तियों की कल्पना की गयी है।
4. **विभिन्न देवी देवताओं की पूजा :-** हिन्दू समाज में सामाजिक जीवन से संबंधित देवी-देवताओं की शक्ति की कल्पना की गयी है।
5. **निश्चित कर्म काण्ड :-** 1. प्रतीक संबंधी 2. दिवस संबंधी

धर्म के रूप :- धर्म के निम्न तीन रूप हैं —

1. **सामान्य धर्म :-** सामान्य धर्म वह है जिसका पालन विश्व के सभी व्यक्तियों द्वारा सामान्य रूप से किया जाता है।
2. **विशिष्ट धर्म :-** विशिष्ट धर्म वह धर्म है जिसका पालन समाज किसी विशेष परिस्थिति एवं काल में करता है।
3. **आपद धर्म :-** आपद धर्म वह धर्म है जब व्यक्ति किसी संकटकालीन परिस्थिति में पालन करता है।

सामान्य धर्म एवं विशिष्ट धर्म में अंतर :-

विशिष्ट धर्म मूलतः सामान्य धर्म पर आधारित होता है, परन्तु दोनों में कुछ आधारभूत अंतर है- जो निम्नलिखित है -

1. सामान्य धर्म का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और विशिष्ट धर्म एक समाज विशेष के लिए होता है।
2. विशिष्ट धर्म, सामान्य की अपेक्षा अधिक महत्व रखता है।
3. सामान्य धर्म आदर्शवादी और विशिष्ट धर्म उपयोगितावादी है।
4. सामान्य धर्म के लिए मूलतः स्थायी है और विशिष्ट धर्म के नियमों में परिवर्तन किया जा सकता है।
5. सामान्य धर्म का मुख्य उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति और विशिष्ट धर्म का मुख्य उद्देश्य लौकिक जीवन से सम्बद्ध होता है।

सामाजिक जीवन में हिन्दू धर्म का महत्व

सामाजिक जीवन में हिन्दू धर्म का निम्नलिखित महत्व है -

1. समाज को संगठित एवं सुव्यवस्थित करने में सहायता :- धर्म के अंतर्गत सामाजिक जीवन को संगठित एवं सुव्यवस्थित करने में सहायता प्रदान करता है।
2. व्यक्तित्व का विकास :- धर्म एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का विकास होना संभव है।
3. अनौपचारिक नियंत्रण का साधन :- धर्म में अनौपचारिक नियंत्रण का मुख्य स्थान है, इसमें धर्म के पीछे ईश्वरीय दण्ड का भय छुपा हुआ है।
4. संस्कृति की रक्षा :- हिन्दू धर्म के कारण ही हिन्दू संस्कृति अपने पूर्ण रूप से हो पायी है।
5. सामाजिक कल्याण में सहायता :- हिन्दू धर्म में सामाजिक कल्याण को अधिक महत्व देने के कारण मनुष्य के सभी मानवीय गुणों का विकास हुआ है।
6. निष्काम कर्म के लिए प्रेरणा :- धर्म ही व्यक्ति को निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देता है, इसमें व्यक्ति बिना किसी फल की चिन्ता किये हुए कर्म करने की प्रेरणा देता है। भगवान श्री कृष्ण भगवत गीता में इसकी विशेष रूप से चर्चा की है।